स्त्री विमर्श में नयापन

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

स्त्री विमर्श में नयापन

डॉ. गौरव त्रिपाठी, डॉ. कामिनी वर्मा

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

स्त्री विमर्श में नयापन

संस्करण : 2019
© सम्पादक
ISBN: 978-93-88998-32-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।
इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के द्वारा प्रकाशित।

SAMPLE COPY

समर्पण

हमारे प्रेरणा स्रोत

प्रातः स्मरणीय, पूजनीय

राम स्नेही वर्मा (सेवानिवृत्त अभियंता)

एवं

पूजनीया

श्रीमती यशोधा देवी वर्मा

को सादर।

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

भूमिका

विमर्शों की आपाधापी में स्त्री विमर्श पर रातों–रात अकादमिक शोध कार्य जमा कराने की होड़ लगी हुई है। खासतौर से महिला लेखन में स्त्री विमर्श की धूम मची हुई है। आलोचक एक आन्दोलन और इस सर्वप्रमुख प्रवृत्ति के तहत रचना और रचनाकार का मूल्यांकन करने पर तुला हुआ है। ''स्त्री विमर्श में नयापन'' पुस्तक का सुखद पहलू यह है कि सहयोगी आलेखकारों ने स्त्री विमर्श की खेमेबन्दी को नेपथ्य में धकेल व्यापक स्तर पर स्त्री से जुड़े सरोकारों की पड़ताल की है।

संभवतः पुस्तक के संपादक जान चुके हैं कि दुराग्रह की हद तक पहुँचा स्त्री विमर्श अनेक भ्रान्तियों का शिकार भी हुआ है। मसलन, इस विचारधारा से प्रभावित स्त्री पुरुष से घृणा करती है, या फिर स्त्री विमर्श अराजक मानसिकता से जुड़ा है और यह भी कि स्त्री विमर्श सामाजिक व्यवस्था की नींव हिला देता है। अगर ऐसा होता तो स्त्री–पुरुष से जुड़ी मानवीय और विकासमूलक संभावनाएं प्राचीन काल से कैसे पनपती रहतीं। वास्तविकता यह है कि स्त्री विमर्श पारम्परिक सामाजिक व्यवस्था की अविवेकपूर्ण स्थितियों को बदलना चाहता है। इस व्यवस्था में स्त्री के प्रति शोषण की जो मानसिकता है, लड़ाई उस शोषण और मानसिकता के खिलाफ है। पुरुष ने जब अपने अधिकारों को समस्त मानव जाति का अधिकार मान लिया तो ऐसे में मानव तन्त्र ज़रूरी है, पुरुष तन्त्र नहीं। यदि स्त्री विमर्श न्याय और समानता की ज़मीन पर खड़ा होकर यथास्थिति के परिवर्तन के पक्ष में है तो इसमें बुरा क्या है? स्त्री की लड़ाई पुरुष से नहीं, पुरुष के वर्चस्ववादी संस्कार से है।

स्त्री विमर्श में नयेपन की तलाश करते हुए नारी अस्मिता और नारी चेतना पर चर्चा की जानी चाहिए। नारी अस्मिता वैयक्तिक संदर्भ में अधिक कारगर होने वाली संकल्पना है। इसका सम्बन्ध जागरुकता के भाव

से जुड़ा है। हाँ, यह अलग बात है कि संकल्पना की दृष्टि से नारी अस्मिता निज स्तर पर मात्र अपनी पहचान के प्रति सचेत होती है। अपने चहुँ ओर के परिवेश के साथ अलगाव महसूस करने की स्थिति से अस्मिता का प्रश्न मुखर होता है जबकि अस्मिता–विमर्श सत्ता के समीकरण और व्यक्ति के संतुलन में अपने हिस्से पर दांव की सैद्धान्तिकी पर टिका है। नारी चेतना में नारी अपनी सम्पूर्ण बिरादरी (स्त्री) चाहे वह किसी भी समुदाय से जुड़ी हो, की पहचान को लेकर प्रयत्नशील होती है। इसमें केवल निज तक सीमित होने का निषेध है क्योंकि चेतना परिवेश सापेक्ष होती है। इसीलिए चेतना का सम्बन्ध उत्तरदायित्व की भावना से है। इस उत्तरदायित्व का विकास अस्मिता के समय होता है। दरअसल चेतना सम्पन्न होने पर अस्मिता बोध और अस्मिता बोध होने पर चेतना जाग्रत होती है। एक अकेली स्त्री से लेकर संपूर्ण नारी वर्ग को लेकर जितनी भी बातचीत, विश्लेषण है उसे समग्र रूप में नारी चिन्तन कहा जा सकता है।

सभ्यता–संस्कृति, स्त्रीत्व की अवधारणा और जातीय मनस् स्त्री को स्त्री बनाता है। स्त्री तो संपूरक है, इन्सान नहीं। आदर्श सिर्फ स्त्री के लिए पुरुष के लिए नहीं, क्यों? केवल माँ, बहन, बेटी, पत्नी की चारदीवारी में भला इक्कीसवीं सदी की नारी को कैद करना कहाँ तक उचित और संभव है? नारी माँ है, देवी है, शक्ति है, इस प्रकार के भारी–भरकम तमगे हमारे शास्त्रों में, धार्मिक ग्रन्थों में लटके पड़े हैं, लेकिन आधुनिकता के चलते पुरुष की लम्पट प्रवृत्ति से एक नये प्रकार का रीतिकाल खड़ा हुआ है। इसीलिए इन तमगों पर उस भ्रम का पानी चढ़ा हुआ है, जिनकी अपनी चकाचौंध से ही नारी आश्वस्त होकर बैठ गई कि वह वही है, जोकि वह नहीं है। ठीक वैसे जैसे लोकतंत्र में 'लोक' अलग हट जाता है और अगर 'लोक' रहता भी है तो तन्त्र का शिकार होकर उसी में सिमटा, उसी के शिकंजे में जकड़ा हुआ।

बाहरी संस्कृतियों के आक्रमण, मुगलों के भय ने घूंघट, घर की चारदीवारी में क़ैद और बाल विवाह जैसी बंदिशें लगवा दीं। दूसरी ओर अंग्रेज़ों के ईसाई धर्म से खौफ़ खाया भारतीय जनमानस शिक्षा और खुली हवा से लड़कियों को कोसों दूर रखने लगा। परिणाम यह हुआ कि लड़की को पता भी नहीं चल पाता था कि वह गुलाम है। वह एक ऐसा चूज़ा बन गई, जिसे पैदा होते ही बोतल में डाल दिया; वयस्क होने पर बोतल तोड़ी भी गई तो उसे न पँखों का मालूम था, न उनके इस्तेमाल का तजुर्बा था।

ध्यान से देखें तो सन् 1857 का स्वातन्त्र्य आन्दोलन वास्तव में नारी स्वातन्त्र्य का आन्दोलन भी कहा जा सकता है। 'झाँसी मेरी है' घोषणा से झाँसी की रानी ने नारी के लिए 'मेरी' पर बल देकर व्यक्तिगत स्वावलम्बन और अधिकार को चेताया। यह वह बूँद थी, जो नारी के पराधीन, तप्त हृदय पर फ़ना हो गई, जिसकी ओर कमोवेश ही हमारा ध्यान जाता है। फिर तो जैसे दग्ध, तप्त हृदय पर पुनर्जागरण, राष्ट्रीय आन्दोलन, स्वतन्त्रता की बौछारें पड़ती रहीं और हृदय शान्त होने की बजाय और भी तप्त हो उठा। इस राजनीतिक परिवेश के साथ समाज में भी आमूल–चूल परिवर्तन हुए – संयुक्त परिवारों के विघटन, मंहगाई, बेरोज़गारी से नारी के मन में आर्थिक सहयोग का विचार आया। इस विचार को उसकी शिक्षा ने क्रियात्मक रूप दिया तथा उसके मन में छिपी अस्तित्व की अभिव्यक्ति एवं व्यक्तित्व प्रकाशन की भावना ने इसे गति दी। इससे नारी घर की चारदीवारी तो लांघ गई पर विभाजित भी हो गई। जहाँ उसमें सहयोग की भावना है वहाँ वह माँ, गृहिणी ही बनी रहती है, बराबर टूटती हुई और उसे पता भी नहीं चलता या नहीं चलने देती कि वह बिखरती जा रही है, जबकि स्वाबलम्बी होने पर उसकी मानसिकता में अहं भाव विराट होने लगता है, वह आश्रिता न रहकर आश्रयदाता हो जाती है।

स्त्री–पुरुष को लेकर भारतीय समाज का ढांचा इस तरह का है कि बाल की खाल निकालने के लिए सिर्फ लिंग–भेद पर्याप्त है। लड़की के लिए स्थिति और भी विकट हो जाती है, जब केवल उसी पर पूरे परिवार की ज़िम्मेदारी हो और उसे भावनात्मक धरातल पर परिवार से जोड़कर अपने विवाह की सोच को दमित करने के लिए विवश किया जाए। ऐसी स्थिति में अपनी ज़रूरतों, अपेक्षाओं, स्वप्नों को लेकर प्रश्नों की भीड़ उसे कुंठित करने के लिए पर्याप्त होती है। सामाजिक ढांचे, संकीर्ण पारिवारिक मानसिकता के कारण ससुराल पक्ष कमाऊ बहू से अनजाने–अनचाहे रूप से आशंकित रहता है, जिसके रहते मानसिक तनाव अनिवार्य रूप से भोगना उसका नित्य कर्म हो जाता है। पति चाहता है पत्नी 'वेल क्वालीफाइड' ही नहीं, 'वेल सैटल्ड' भी हो। उसकी मंशा होती है कि पैसा कमाने में पत्नी उसके साथ कंधे से कंधा मिला कर चले, त्याग–बलिदान की प्रतिमूर्ति बन कर केवल पत्नी बन कर जूती में तब्दील हो जाए। वह स्त्री के पुरुष मित्रों को स्वीकार नहीं करता क्योंकि कहीं–कहीं कम शिक्षा, संकीर्ण विचार, पत्नी से कम आय

उसमें यह कुण्ठा उत्पन्न कर देते हैं कि पत्नी के सभी पुरुष सहयोगी उसके प्रेमी हैं। आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि जिस समाज में मान–सम्मान, प्रतिष्ठित व्यक्तित्व की एक मात्र कसौटी कमाऊ होना हो, वहाँ कमाऊ नारी के प्रति असम्मान क्यों? हालाँकि अपवादस्वरूप पति मानसिक, शारीरिक, घरेलू धरातल पर सहयोगी मानसिकता वाले भी होते हैं शायद यही कारण है कि पत्नी माँ बन कर भी नौकरी में स्वयं को बनाए रख पाती है।

स्त्री असुरक्षित है पर किससे? – पुरुष समाज की सामन्ती प्रवृत्ति या फिर स्वयं पर लादी मर्यादा से, मर्यादा का सवाल केवल पुरुष या शेष समाज की ओर से ही नहीं स्वयं स्त्री की ओर से भी उठाया जाता है। स्त्री से जुड़ा सबसे दुःखद एवं चिन्ताजनक पहलू यह है कि उसकी मुक्ति को देह–मुक्ति का पर्याय मान लिया गया। पुरुषों के समान होने और उससे भी अधिक मनुष्य रूप में सामाजिक पहचान बनाने एवं आत्मनिर्भरता की हड़बड़ी में स्त्री विषयक आधुनिक अवधारणाएं जैसे स्त्री विमर्श, नारी अस्मिता, नारी चेतना अन्ततः देह विमर्श से जुड़ गईं। खासतौर पर महिला लेखन और उसमें भी विशेष रूप में महिला आत्मकथाओं एवं आत्मकथात्मक उपन्यासों में लैंगिक–यौनिक कुण्ठा और वर्जनाओं का वर्णन धड़ल्ले से हुआ जिसके चलते महिला लेखन कटघरे में आ गया। परिणामस्वरूप साहित्यिक धरातल पर दो विपरीत लिंगियों के बीच आपसी तनातनी और छींटाकशी की लहर तेज़ हो गई। पहले से ही पुरुष समाज नारी के दिमाग को नहीं मानता क्योंकि उसकी मान्यता के अनुसार न वह सोच सकती है और न ही उसे सोचने का अधिकार है। उस पर कयामत यह कि स्त्री–लेखन के ज़रिए जो परोसा जा रहा है उससे उसकी इस मान्यता पर ठप्पा लग गया कि वह यदि सोचेगी और लिखेगी तो वह ऐसा ही कुछ विवादास्पद और असामाजिक होगा। इस प्रकार आज के दौर में साहित्यिक स्तर पर स्त्री के समक्ष नयी चुनौतियां आ रही हैं।

महिला रचनाकार और अभिजात्य स्त्री मुख्यधारा में हैं। वर्तमान परिदृश्य यह है कि हाशिए की स्त्री जो अशिक्षित, साधनहीन, पिछड़े इलाकों में काम करती है वह नाच रही है और मुख्यधारा की स्त्री उसे नचा रही है। इस प्रकार एक नये तरह का स्त्री विमर्श उभर रहा है। इन दो धाराओं की स्त्रियों की स्थितियों, ज़रूरतों और समस्याओं में अन्तर है। ज़ाहिर है कि इस आधार पर उनका संघर्ष और प्रयत्न भी भिन्न होगा अतः पूरे नारी समाज पर एक जैसे

नियम लागू नहीं किए जा सकते। हालाँकि उनकी सर्वविदित स्थिति और सरोकारों पर एक राय बन सकती है लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी के पाये सत्य से ज़िन्दगी नहीं जी जाती। हर एक के भीतर अपना–अपना एक बोधिसत्व होता है। इस स्तर पर कहा जा सकता है स्त्री जब अपनी मुश्किलों से खुद निपटने लगेगी तो उसी प्रक्रिया में चेतना सम्पन्न होकर अपने भीतर छिपी अपार संभावनाओं को भी तलाश लेगी।

इस परिप्रेक्ष्य में ''स्त्री विमर्श में नयापन'' पुस्तक में दर्ज स्थापनाओं की पहचान की जा सकती है। पुस्तक में स्त्री के ऐतिहासिक विकास, उसकी सामाजिक स्थिति, उससे जुड़ी समस्याओं, समाधान की संभावनाओं, उसके सपनों और यथार्थ को प्रस्तुत करने वाले आलेख हैं। दूसरी श्रेणी के आलेखों में स्त्री विमर्श को केन्द्र में रखकर किसी रचना विशेष का विवेचन–विश्लेषण और मूल्यांकन हुआ है। तीसरे वर्ग में रचनाकार को धुरी बनाकर उसकी नारी विषयक संकल्पना से रू–ब–रू कराने वाले लेख हैं। यहाँ स्त्री पर केन्द्रित कई लेखों में तथ्यगत अभिव्यक्तियाँ हुई हैं। मसलन, भारत में स्त्री शिक्षा सम्बन्धी नियम, नीति और आयोग की जानकारी, नारी की संवैधानिक स्थिति, स्त्री विकास हेतु विभिन्न योजनाओं, पश्चिमी और भारतीय नारी में अन्तर, परम्परागत और 21वीं सदी की नारी का विकास एवं नारी सशक्तिकरण पर शोधपरक आलेख संपादक ने संकलित किए हैं। इसी क्रम में स्त्री का ऐतिहासिक विकास दर्शाने वाले प्रपत्रों के अन्तर्गत भारत में स्त्री की स्थिति पर विचार करते हुए बौद्धकाल, आयुर्वेद, संस्कृत साहित्य से सन्दर्भ जुटाए गये हैं। सीता से लेकर आज तक की नारी को ऐतिहासिक नज़रिए से खंगाला गया है। स्त्री सम्बन्धी सैद्धान्तिकी प्रस्तुत करने के साथ व्यावहारिक रूप में साहित्यिक धरातल पर स्त्री का चित्रण करने में भीष्म साहनी, कमलेश्वर, मार्कण्डेय, राजेन्द्र यादव, विवेकी राय जैसे लेखकों ने पुरुष होने के बावजूद जिस नारी हृदय से उन्हें देखा–परखा है उनके हवाले इस पुस्तक को सार्थकता प्रदान करते हैं।

महत्व इस बात का नहीं कि कौन लिख रहा है बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि वह जिस पर लिख रहा है उसके भीतर कितना उतरा है। लिखने के क्रम में वर्ण्य विषय का हो जाना या यों कहें कि खुद को रूपान्तरित करते हुए वही हो जाना खास अहमियत रखता है। किसी खास वर्ग के लेखक द्वारा अपने वर्ग के लिए लिखना बड़ी बात नहीं है बल्कि उस वर्ग का होकर

लिखना ज़्यादा ज़रूरी है। जब हम साहित्य को स्त्री और पुरुष लेखन में बाँट देते हैं तो इस बात की गुंजाइश बनी रहती है कि जिस पक्ष की बात की जा रही है वह मात्र उस तक ही तो सिमट कर नहीं रह जाती या फिर प्रतिपक्ष सजग होकर विरोधी की भूमिका निभाहने के लिए तैयार तो नहीं हो जाता? ये दोनों ही स्थितियाँ साहित्यिक नज़रिये से ख़तरनाक हैं। इन तमाम बिन्दुओं पर विचार–विमर्श करने वाले लेखों को संकलित करने का रुझान संपादकीय कर्म को अन्वित करने का प्रेरणा स्रोत बना है। इस प्रेरणा पर खरा उतरने के लिए संपादक द्वय, उनके सहयोगी लेखकों एवं प्रकाशक को हार्दिक बधाई।

शुभाकांक्षी

डॉ. रजनी बाला
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

नमूना • SAMPLE

सम्पादकीय

यह सृष्टि केवल और केवल प्रकृति के कारण ही साश्वत है। हम आप तो जानते ही हैं कि इस प्रकृति में स्त्री समाहित है। स्त्री की अस्थि और मज्जा से ही हमारा अर्थात् पुरूष का निर्माण हुआ है। पुरूष अपने अहं और दंभ के चलते प्रकृति को कैद करना चाहता है। प्रकृति पर शासन स्थापित करना चाहता है। इस शासन को बनाये रखने के लिये पुरूष एक वैचारिकी का प्रवाह करता है, जो पितृसत्तात्मक विचारधारा के रूप में दिखलायी पड़ती है। यही विचारधारा सदा सर्वदा के लिये स्त्रियों को अपने कैद में ले लेता है। यह स्त्रियों में एक अनजाना भय भर देता है साथ ही साथ उत्तरदायित्व का भी हर क्षण बोध कराता रहता है। इसके परिणामस्वरूप स्त्रियाँ चाहकर भी पुरुष द्वारा निर्मित वृत्त की परिधि को पार नही कर पाती हैं स्त्रियों द्वारा जिस क्षण पुरूषों को अपना संरक्षक एवं मार्गदर्शक स्वीकार कर लिया जाता है उसी क्षण ही पुरुष उनका शोषण प्रारंभ कर देता है

भारत में वैदिक काल में स्त्रियाँ की दशा अत्यंत गरिमापूर्ण थी। पुरूष के समान समादृत एवं विदुषी थी। भक्ति काल में भी स्त्रियाँ सम्मान की दृष्टि से देखी जाती थी। कालांतर में जब मुगल साम्राज्य की भारत में स्थापना हुयी तब से लेकर औपनिवेशिक काल एवं आधुनिक काल तक स्त्रियों की दशा में अत्यंत ह्रास आया है। स्त्रियों की दशा का स्पष्ट विवेचन भारतीय हिंदी साहित्य में दिखलायी पड़ता है। साहित्यकारों ने स्पष्ट लिखा है कि "स्त्रियाँ विरोधाभासों में जीती हैं।" उनके ऊपर यह पुरुषवादी समाज उपयोगितावादी, आत्मकेंद्रित, मिथ्याचारिणी और नाटकीय जैसे हजारों आक्षेप लगाता है। अल्का सरावगी ने अपने उपन्यास "कलि कथा बाईपास" में स्त्रियों की स्वतंत्रता पूर्व की गयी उपेक्षा एवं उन पर लगाये गये प्रतिबंधों का एक शब्दचित्र खींचा है जिसमें हाथरस का उदाहरण देते हुये बताया है कि

स्त्रियाँ घूंघट में रहती थी और पड़ोसी के घरों में छतों के रास्ते जाया करती थी। छत मानों सडक हो गये हों।

हिंदी साहित्य समाज एवं परिवार की मनोदशा का भी स्पष्ट शब्द चित्र प्रस्तुत करता है। उषा प्रियंवदा ने अपनी उपन्यास "पचपन खंभे लाल दीवार" में यह बतलाती हैं कि एक कमाऊं पुत्री का विवाह पिता इसलिये नही करता है कि उसका और परिवार का भरण–पोषण कैसे होगा। वह पुत्री तो संकोच के कारण अंदर ही अंदर परेशान रहती है। भीष्म साहनी ने भी अपने–अपने कहानियों एवं नाटकों में भी जो कथावस्तु प्रस्तुत किया है वह आज के समाज में सरोगेसी के रूप में दिखलायी पड़ रही है। यह कितनी बड़ी विडंबना है कि किराये की कोख के रूप में प्राप्त संपदा पर भी स्त्री का अपना कोई हक नही होता है।

हिंदी साहित्य में पाश्चात्य चिंतकों के भी तर्कों को भी स्वीकारते हुये कथा साहित्य का निर्माण किया गया है। मेरी वोल्स्टोन क्राफ्ट कहती हैं कि प्रेम समानता के मूल्यों पर टिका होता है, किंतु क्या पुरूष समानता करता है, के तर्कों को हिंदी साहित्य में नायिकाओं के माध्यम से उद्घोष कराया है गया है नायिकायें कहती हैं कि "बिना चेतनशील हुये मुक्ति संभव नही है।" विवेकी राय अपने उपन्यासों में स्त्री दशा को उद्घाटित किया है जिसमें दहेज के विरूद्ध जन एवं नारी शक्ति का समन्वय किया है। यहां विवेकी राय की पात्र जयन्तिया का यह कथन उल्लेख करना समीचीन होगा कि "याद रखो कि तुम्हारी क्रांति–पूर्ण तब होगी जब मै तुम्हारे साथ चलूंगी।" यह स्पष्ट होता है कि समाज निर्माण में स्त्रियों की भूमिका बराबरी का है।

कौसल्या बैसंत्री ने जहां दलित स्त्रियों की दशा को हिंदी साहित्य के माध्यम से वर्णित किया है, वहीं शरद सिंह जैसे साहित्यकार ने बेड़ियां जनजाति की स्त्रियों की सामाजिक प्रस्थिति का वर्णन किया है। शरद सिंह ने कितना यथार्थ लिखा है उतना तो समाज वैज्ञानिक भी न लिख पाता। शरद सिंह लिखते हैं कि "औरत बस पानी की तरह है जिसे न धरती चुनने का अधिकार है न ही प्यास बुझाने का।"

स्त्रियों की दशा भारत में अत्यंत चिंताजनक रही है। 1931 के जनगणना के अनुसार भारत में 10% विधवायें 1 वर्ष की आयु या कम आयु की रही। कितनी घोर विडंबना है। आज आजादी के कितने दशक हो गये उसके

बावजूद भी दहेज एवं बाल विवाह जैसी कुरीतियाँ तथा यौनिक शोषण का अंत नही हो सका है। आज भी पुरूष अपने को स्त्रियों की योनि एवं प्रजनन का पहरेदार समझता है। वह समय अब कब आयेगा जब स्त्रियाँ अपने देह की स्वयं मालिक होगीं तथा देह को संपत्ति की अवधारणा से बाहर रखा जायेगा?

आज यह पुस्तक जब प्रकाशित होने का अवसर आया है तब विद्वत्जन के प्रति आभार ज्ञापित करना हम पुनीत कर्तव्य एवं दायित्व समझते है। हम सबसे पहले उन सभी विद्वान लेखकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते है जिनके लेखों के संकलन एवं संग्रहण से यह पुस्तक प्रकाशित होने का अवसर आया है। इसके साथ ही साथ प्रो. डॉ. लालजी त्रिपाठी, पूर्व प्राचार्य, मडियाहूँ पी. जी. कॉलेज, जौनपुर, प्रो.डॉ. प्रीति गौतम, निदेशक, उच्च शिक्षा उ.प्र., डॉ. पी. के. वार्ष्णेय, संयुक्त शिक्षा निदेशक, उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश, प्रो. डॉ. अमित भारद्वाज, संयुक्त सचिव, उच्च शिक्षा विभाग, उ.प्र. शासन, प्रो. डॉ. बी. एल. शर्मा, सहायक निर्देशक, उच्च शिक्षा, उत्तर प्रदेश, प्रो. पी.एन. डोगरे, प्राचार्य, के.एन.पी.जी. कॉलेज, ज्ञानपुर, प्रो. डॉ. सविता भारद्वाज, प्राचार्य राजकीय महिला पी.जी. कॉलेज गाजीपुर, प्रो. डॉ. शीलप्रिय त्रिपाठी, प्राचार्य, राजकीय पी.जी. कॉलेज बिंदकी, फतेहपुर, प्रो. डॉ. यशोधरा शर्मा, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, सेवापुरी, वाराणसी, प्रो. डॉ. कुमुद त्रिपाठी, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, सहजनवाँ, गोरखपुर तथा राजकीय महाविद्यालय उ.प्र. के डॉ. लक्ष्मी यादव, डॉ. मो. तौफीक, डॉ. रीना सिंह, डॉ. तेज प्रकाश चतुर्वेदी, डॉ. प्रभात पांडेय, डॉ. विवेकानन्द, डॉ. के के उजाला, डॉ. रमोद मौर्य, पुस्कालय अध्यक्ष, डॉ. राजकुमार, डॉ. शिवाकांत त्रिपाठी, डॉ. भाष्कर शुक्ल, डॉ. महेंद्र त्रिपाठी, डॉ. विष्णुकांत त्रिपाठी, डॉ. आनंद सिंह, डॉ. श्रीप्रकाश मिश्र, डॉ. धीरेंद्र सिंह, डॉ. प्रियंका पटेल, डॉ. मिथिलेश सिंह, डॉ. संगीता सिन्हा, डॉ. आशुतोष त्रिपाठी, डॉ. बृजेश मिश्र, डॉ. जे.बी. सिंह, डॉ. अतुल कुमार पांडेय, डॉ. रीता सिंह, डॉ. मृत्युंजय सिंह, डॉ. अवधेश मिश्र, डॉ. विशाल श्रीवास्तव, डॉ. बृजेश श्रीवास्तव, डॉ. दिनेश कुमार राजपूत, डॉ. संजीव गुप्ता, डॉ. जितेन्द्र विक्रम वेद, डॉ. पीयूष चन्द्र मिश्रा, डॉ. प्रिया त्रिपाठी एवं डॉ. भैया लाल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनके प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोग से यह पुनीत कार्य संभव हो सका है।

इसी क्रम में इस पुस्तक के संपादक साथी डॉ. गौरव त्रिपाठी के पिता जी डॉ. कमला कांत त्रिपाठी प्रिंसिपल इंटर कॉलेज तेजगढ़ के प्रति हम आभार ज्ञापित करते हैं जिहोंनें प्रूफ रीडिंग में हम लोगों को सहयोग प्रदान किया। अंत में हम अपने प्रकाशक अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस के स्वामी वीरेन्द्र कुमार यादव के प्रति आभार व्यक्त करते है जिनके सहयोग से यह पुस्तक हम लोगों के हाथों में आ सकी है।

डॉ. गौरव त्रिपाठी, डॉ. कामिनी वर्मा

नमूना • SAMPLE

योगदान सूची

1. **डॉ. लल्लन यादव,** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, माँ कमला महाविद्यालय तेजपुर, सुलतानपुर, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश।
2. **अनिल कुमार यादव,** असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, पी0जी0 कालेज, पट्टी, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश।
3. **आरजू सिंह,** असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, भाऊराव देवरस राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुद्धी, सोनभद्र, उत्तर प्रदेश।
4. **रश्मि गुप्ता**, शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, वी0एस0एस0डी0 कॉलेज कानपुर, उत्तर प्रदेश।
5. **डॉ. विभा,** असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जलेसर, एटा, उत्तर प्रदेश।
6. **संदीप आदित्य,** शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
7. **शज़िया बशीर,** शोध छात्र, हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर, जम्मू कश्मीर।
8. **डॉ. ज्योति मिश्रा,** सदस्य–सोसाइटी ऑफ बॉयलाजिकल सांइसेज एण्ड रूरल डेवलपमेंट, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।
9. **डॉ. सुनीता यादव,** प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश।

SAMPLE

10. **डॉ. मिथिलेश कुमार सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, सावित्री बाई फूले राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चकिया, चन्दौली, उत्तर प्रदेश।

11. **डॉ. धीरेन्द्र सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय, मानिकपुर, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश।

12. **डॉ. दिनेश कुमार राजपूत,** असिस्टेंट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, राजकीय महाविद्यालय फतेहाबाद, आगरा, उत्तर प्रदेश।

13. **डॉ. मोनिका सरोज,** असिस्टेंट प्रोफेसर, बी0एड्0 विभाग, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर, भदोही, उत्तर प्रदेश।

14. **राखी भारती**, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, दीनानाथ पाण्डेय राजकीय महिला पी0जी0 कालेज, देवरिया, उत्तर प्रदेश।

15. **डॉ. विदुषी शर्मा,** एकेडमिक कांउसर, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

16. **सौम्या मिश्रा,** डिपार्टमेंट ऑफ बॉटनी, के.एन. गवर्नमेंट पी.जी. कॉलेज, ज्ञानपुर, भदोही, उत्तर प्रदेश।

17. **श्रुति मिश्रा,** डिपार्टमेंट ऑफ बॉटनी, हंडिया पी.जी. कॉलेज, हंडिया, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

18. **डॉ. सिद्धार्थ तिवारी,** वैज्ञानिक, पंतजलि शोध संस्थान, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

19. **डॉ. शशिकला जायसवाल,** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय महिला स्नातकोतर महाविद्यालय गाजीपुर, उत्तर प्रदेश।

20. **डॉ. जयदेव,** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, महामाया राजकीय महाविद्यालय धनुपूर, हंडिया, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

21. **डॉ. चेतना उपाध्याय,** वरिष्ठ व्याख्याता, जिला प्रशिक्षण संस्थान मसूदा, अजमेर, राजस्थान।

SAMPLE

22. **डॉ. धीरज कुमार गुप्ता,** असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही, उत्तर प्रदेश।

23. **डॉ. सुनीता मिश्रा,** असिस्टेंट प्रोफेसर, डिपाटमेंट ऑफ होम सांइस, के.आर.पी.जी. कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश।

24. **डॉ. मनीषा सिंह,** कार्यवाहक प्राचार्य/असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, शिवदुलारी देवी दलडपट शाही महिला महाविद्यालय रामकोला, कुशीनगर, उत्तर प्रदेश।

26. **डॉ. ऋचा शुक्ला,** प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग, ग्राम्यान्चल पी0जी0 कॉलेज, हैदरगढ़, बाराबंकी, उत्तर प्रदेश।

27. **डॉ. गौरव त्रिपाठी,** असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, श्रीमती इन्दिरा गांधी राजकीय पी.जी. कालेज, लालगन्ज, मीरजापुर, उत्तर प्रदेश।

28. **डॉ. अवधेश कुमार,** असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय, भदोही, उत्तर प्रदेश।

29. **डॉ. चन्द्रशेखर तिवारी,** अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, अवधूत भगवान राम स्नातकोत्तर महाविद्यालय अनपरा, सोनभद्र, उत्तर प्रदेश।

30. **डॉ. हिमांगी त्रिपाठी,** साहित्यकार, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

31. **पोली रानी राउत,** एम0 फिल, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलककत्ता, पश्चिम बंगाल।

32. **डॉ. प्रज्ञा मिश्रा,** असिस्टेंट प्रोफेसर, गणित विभाग, पं0 दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, राजाजी पुरम, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

33. **रामेश्वर नाथ मिश्र,** एम0 ए0, एम0एड्0, अवकाश प्राप्त शिक्षक, एवं ख्याातिलब्ध लेखक, राष्ट्रपति से पुरस्कार प्राप्त।

34. **रवि कुमार,** शोध छात्र, हिंदी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू, जम्मू कश्मीर।

35. **नैन सिंह,** शोधार्थी, हिन्दी विभाग, जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू, जम्मू कश्मीर।

36. **सुशील कुमार,** एम. फिल.–शोधार्थी, हिंदी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू, जम्मू कश्मीर।

37. **भूपेश,** सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नागौर, राजस्थान।

38. **रजनी पाण्डेय,** शोधार्थी, हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल।

नमूना • SAMPLE

विषय सूची

	समर्पण	*v*
	भूमिका	*vii*
	सम्पादकीय	*xiii*
	योगदान सूची	*xvii*
1.	कांटे की बात : स्त्री के बहाने *—डॉ. लल्लन यादव*	1
2.	बौद्धकाल में स्त्रियों के शैक्षिक अधिकार *—अनिल कुमार यादव*	7
3.	हिन्दी में स्त्री आत्मकथा लेखनः दशा और दिशा *—आरजू सिंह*	13
4.	स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर काल में महिला आन्दोलन : एक विश्लेषण *—रश्मि गुप्ता*	21
5.	कार्यशील महिलाएं : ये राह नहीं आसान *—डॉ. विभा*	34
6.	स्त्री—विमर्श का इतिहास *—संदीप, आदित्य*	40
7.	देह की राजनीति देश की राजनीति तक : एक संघर्ष *—शज़िया बशीर*	63

SAMPLE

8. भारत में महिलाओं की बदलती सूरत 73
—डॉ. ज्योति मिश्रा

9. हिन्दी साहित्य में स्त्री अस्तित्व और अस्मिता के स्वर 80
—डॉ. सुनीता यादव

10. पितृसत्तात्मक वैचारिकी, स्त्री एवं भारतीय समाज 89
—डॉ. मिथिलेश कुमार सिंह, डॉ. दिनेश कुमार राजपूत

11. महिला प्रस्थिति : एक समकालीन विमर्श 96
—डॉ. धीरेन्द्र सिंह, डॉ. दिनेश कुमार राजपूत

12. लिंगीय भेदभाव की बेड़ियों में बंधी महिलायें 102
—डॉ. मोनिका सरोज

13. भारत में नारी शिक्षा के विकास हेतु प्रयास 110
—राखी भारती

14. नारी तू नारायणी 117
—डॉ. विदुषी शर्मा

15. महिलायों के जीवन मे औषधीय पौधों की भूमिका 129
—सौम्या मिश्रा, श्रुति मिश्रा, डॉ. सिद्धार्थ तिवारी

16. समकालीन स्त्री—लेखन और चुनौतियाँ 140
—डॉ. शशिकला जायसवाल

17. स्त्री सशक्तिकरण : मुद्दे एवं चुनौतियाँ 147
— डॉ. जयदेव

18. स्त्री विमर्श : एक विहंगम दृष्टिपात 155
—डॉ. चेतना उपाध्याय

19. भारतीय समाज में नारी शक्ति की भूमिका 166
—डॉ. धीरज कुमार गुप्ता

20. महिला सशक्तिकरण 177
—डॉ. सुनीता मिश्रा

SAMPLE

21. नेपाल के प्रजातंत्र संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी 188
—डॉ. मनीषा सिंह

22. संवैधानिक शासन में महिला सशक्तिकरण 196
—डॉ. ऋचा शुक्ला, डॉ. गौरव त्रिपाठी

23. महात्मा गांधी का नारी विषयक दृष्टिकोण 203
—डॉ. अवधेश कुमार

24. विवेकी राय के उपन्यासों में स्त्री विमर्श 212
—डॉ. चन्द्रशेखर तिवारी

25. मार्कण्डेय की कहानियों में स्त्री जीवन की विसंगतियाँ 220
—डॉ. हिमांगी त्रिपाठी

26. दलितों में भी दलित : दलित स्त्री की दोहरी पीड़ा का आख्यान 225
—पोली रानी राउत

27. भारतीय समाज में महिलाओं की दोहरी भूमिका 235
—डॉ. प्रज्ञा मिश्रा

28. कबीर की नारी चेतना 243
—रामेश्वर नाथ मिश्र

29. भीष्म साहनी का स्त्री संघर्ष लेखन और बंसती उपन्यास 256
—रवि कुमार

30. स्त्री विमर्श, स्त्री संघर्ष और कठगुलाब उपन्यास : एक चिंतन 270
—नैन सिंह

31. स्त्री विमर्श के संदर्भ में 'पिछले पन्ने की औरतें' उपन्यास : एक विश्लेषण 276
—सुशील कुमार

SAMPLE

32. बिज्जी के कथा साहित्य में नारी जीवन के विविध आयाम 284
–भूपेश

33. अस्मिता का अर्थ 289
–रजनी पाण्डेय

नमूना • SAMPLE